बनारस से अनवरत प्रकाशित

ISSN : 9334-0970

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

प्रान्ति इंडिया

बीआर/35/0029626

www.prantiindia.com magazine@prantiindia.com +91 94-535354-95 (हिन्दी को समर्पित मासिक पत्रिका)

अप्रैल 2025 हिन्दी साहित्य का एक उदयमान तारा ₹ 50

चयनित **501 कृतियों को** मिलेगा
प्रान्ति इंडिया पुरस्कार

युवा और साहित्य पर आधारित संपादकीय

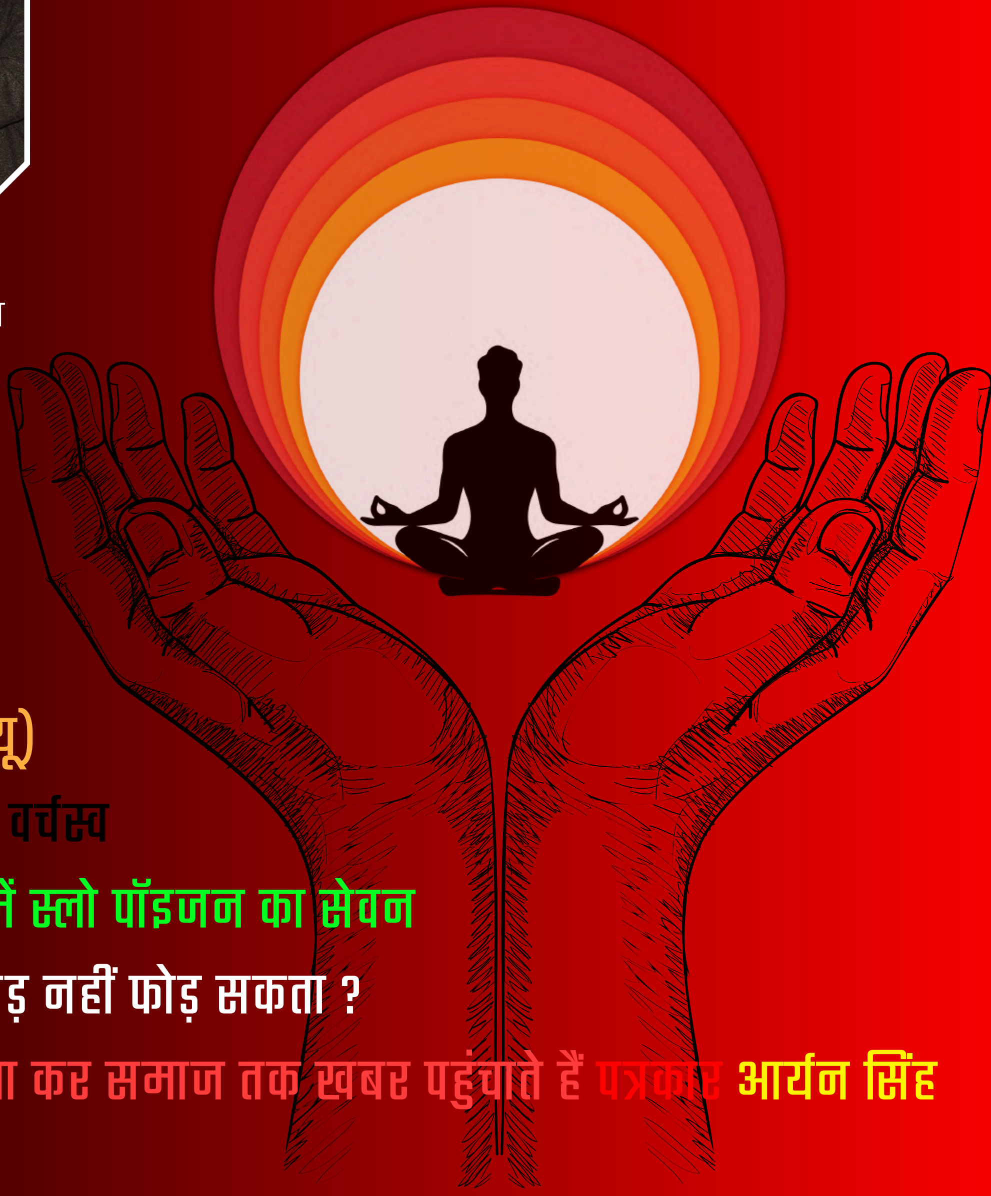

महत्वपूर्ण लेख

- कन्या पूजन
- "देहाती कहीं के"
- छित्तूपुर गेट (बीएचयू)
- सरकारी नौकरी का वर्चस्व
- रोजाना बड़ी मात्रा में स्लो पॉइजन का सेवन
- क्या अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ?
- चुनौतियों का सामना कर समाज तक खबर पहुंचाते हैं पत्रकार आर्यन सिंह

साहित्यिक
कार्यक्रम विशेष

Pranti

हमें भेजिए अपनी साहित्यिक पुस्तक-पत्रिकाएं

चयनित 501 कृतियों को मिलेगा प्रान्ति इंडिया पुरस्कार

नोट : अपनी प्रविष्टियाँ संपादकीय कार्यालय में भेजें।

प्रान्ति इंडिया ISSN : 9334-0970 अप्रैल 2025 मूल्य : ₹ 50 पृष्ठ : 28

प्रधान संपादक
आदित्य कुमार प्रसाद
(ए. के. प्रसाद)

विशेष संपादक
विनोद प्रसाद

प्रबंध संपादक
दिव्यांजलि वर्मा

आवरण : सौरभ कुमार

मुख्य कार्यालय
#495, पुरानी बाजार, बगौरा
सीवान-841404 (बिहार)

संपादकीय कार्यालय
जे11/125, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)

प्रान्ति इंडिया हिंदी साहित्य और संस्कृति को समर्पित एक जीवंत मंच है, जो हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्धि को प्रदर्शित करने और युवा पीढ़ी में इसके प्रति गहरी जागरुकता और प्रेम बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

हमारा मिशन हिंदी साहित्य के विविध पहलुओं को उजागर करना और सामाजिक परिवर्तन में सकारात्मक योगदान देना है, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन और सांस्कृतिक उत्थान हो सके।

ध्यान दें कि सामग्री संपादित करते समय यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी, यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हो तो इसके लिए स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे।

पत्रिका की गुणवत्ता से संबंधित शिकायतों व सुझावों तथा वितरण, सब्सक्रिप्शन और विज्ञापन के लिए ई-मेल करें-
magazine@prantiindia.com
या संपर्क करें-
+91 94-535354-95
(सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रातः साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

संपादकीय पत्र व्यवहार
प्रधान संपादक
जे.11/125 ए-1, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तरप्रदेश)
दूरवाणी : +91 7258072725

इस अंक में..

संपादकीय 04
- प्रसाद

पेंटिंग ऑफ द अंक 05
- आरुषि सिंह

नूतन वर्ष तेरा अभिनंदन 06
- व्यग्र पाण्डे

कन्या पूजन 10
- अर्चना त्यागी

चुनौतियों का सामना कर समाज तक खबर पहुंचाते हैं पत्रकार 13
- आर्यन सिंह राजपूत

सरकारी नौकरी का वर्चस्व 15
- नेहा चौरसिया

रोजाना बड़ी मात्रा में स्लो पॉइजन का सेवन 17
- डॉ. प्रितम भि. गेडाम

क्या अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ? 20
- प्रेमलता चाँदना

❝देहाती कहीं के❞ 22
- दिलीप कुमार

छित्तूपुर गेट (बीएचयू) 25
- ए. के. प्रसाद

आप भी भेजिए अपनी रचना, संक्षिप्त परिचय, फोटो तथा संपर्क सूत्र के साथ।
संपादक का ई-मेल पता है • editor@prantiindia.com

अधिकृत विक्रेता

वाराणसी : राजू मैगजीन स्टोर, लंका | अदिति बुक स्टोर, डीएवी | कमलेश बुक स्टॉल, मैदागिन

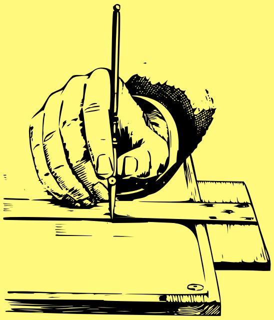

संपादकीय

हमें युवा और साहित्य के रिश्ते को समझना चाहिए, क्योंकि यह रिश्ता अनमोल है। साहित्य युवाओं को जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। यह उन्हें नई दिशाओं में सोचने और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य युवाओं को ज्ञान और समझ प्रदान करता है, विचारों का विकास करता है, सहानुभूति और संवेदनशीलता की भावना विकसित करने में मदद करता है, और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। साहित्य युवाओं को जीवन के अनुभवों को समझने और उनसे सीखने का अवसर प्रदान करता है। यह उन्हें विभिन्न पात्रों और स्थितियों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को देखने और समझने का मौका देता है। साहित्य युवाओं को सहानुभूति, संवेदनशीलता और समझ की भावना विकसित करने में मदद करता है, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साहित्य के माध्यम से युवा अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। यह उन्हें अपने अनुभवों और विचारों को साझा करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे वे अपने आप को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। युवाओं को साहित्य के प्रति आकर्षित करने के लिए हमें साहित्य की शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। हमें स्कूलों और कॉलेजों में साहित्य की शिक्षा को अनिवार्य बनाना होगा, ताकि युवा साहित्य के महत्व को समझ सकें और इसके माध्यम से अपने जीवन को समृद्ध बना सकें। इसके अलावा, हमें साहित्यिक कार्यक्रमों और आयोजनों को आयोजित करना होगा, जो युवाओं को साहित्य के प्रति आकर्षित करें। हमें पुस्तकालयों और साहित्यिक केंद्रों को स्थापित करना होगा, जहां युवा साहित्यिक पुस्तकें पढ़ सकें और साहित्यिक गतिविधियों में भाग ले सकें। साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने से युवा अपने साहित्यिक कौशल को विकसित कर सकते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आत्मविश्वास प्राप्त कर सकते हैं। इससे उन्हें अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल और आत्मविश्वास मिलेगा।

अंत में, युवा और साहित्य का रिश्ता अनमोल है। साहित्य युवाओं को जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। हमें युवाओं को साहित्य के प्रति आकर्षित करने के लिए मिलकर काम करना होगा, ताकि वे साहित्य के माध्यम से अपने जीवन को समृद्ध बना सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सकें।

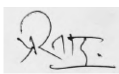

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

पेंटिंग ऑफ द अंक

आरुषि सिंह, बलिया
☎ 9170751895

नूतन वर्ष तेरा अभिनंदन

नूतन बर्ष तेरा अभिनंदन
अगवानी में खड़ी दिशाएं
पलक- पांवड़े बिछा प्रीति के
रहना आशाओं पर खरी खरी
गाना गीत तुम सदा रीति के
करें हम सभी तेरा बंदन।
नूतन बर्ष तेरा अभिनंदन॥
प्रकृति पुष्प लुटाए तुझ पर
हवा प्रेम सरसाये तुझ पर
खुश रहना खुश रखना सबको
सब कुछ वारी जायें तुझ पर
खुशियों से हो प्यारा गठबंधन।
नूतन बर्ष तेरा अभिनंदन॥
बीती बातें बीती रातें
सज रहे हैं सभी अहाते
हो रहा महसूस निराला
अच्छा अच्छा आते-आते
खुशबू बिखरी जैसे चंदन।
नूतन बर्ष तेरा अभिनंदन॥
खुशहाली बनी छबि तेरी
यहाँ बहाँ अनाज की ढेरी
मुस्कान सभी चेहरों की
गा रहे किसान संस्तुति तेरी
लगे हर पल तेरा कंचन।
नूतन बर्ष तेरा अभिनंदन॥

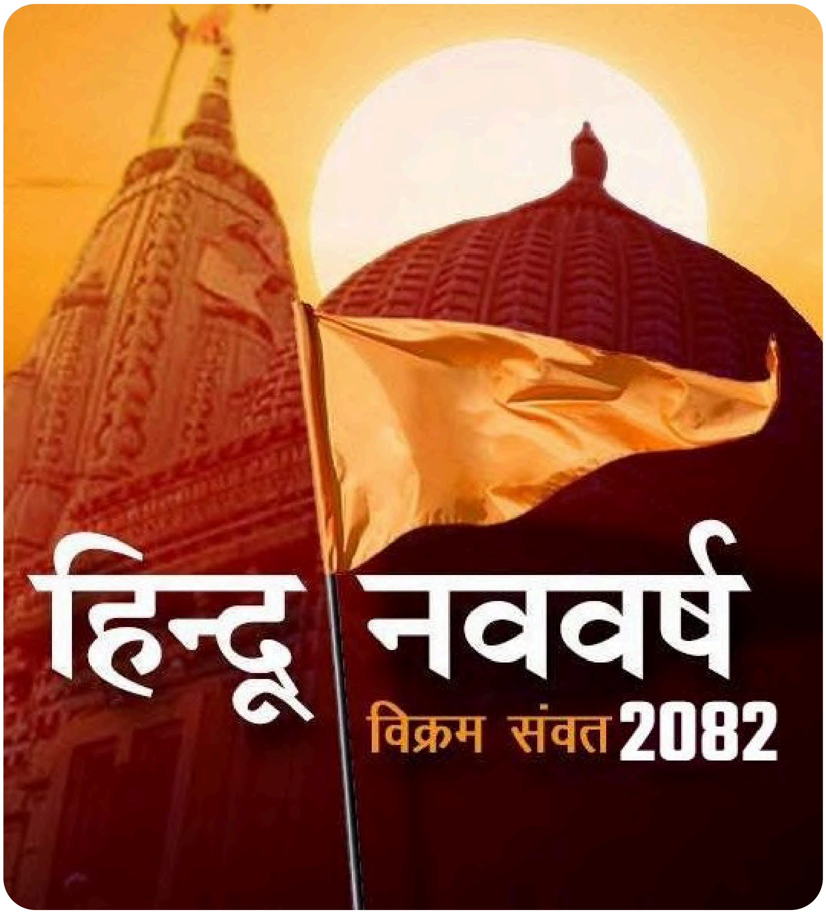

व्यग्र पाण्डे
कर्मचारी कालोनी,
बचपन स्कूल के पास,
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर(राज.)
☎ 9549165579

बचपन

मैं बचपन हूं
मैं ढूंढ रहा हूं बच्चे,
गांव के खाली मैदान में,
खेतों और खलिहान में।
लेकिन नहीं मिले बच्चे,
और मैंने भी खो दिया खुद को।

मैं बचपन हूं
मैं ढूंढ रहा हूं बच्चे,
पुराने पेड़ के पास,
कहीं दूर गिरे हुए रेत के ढेर के पास।
लेकिन नहीं मिले बच्चे,
और मैंने भी खो दिया खुद को।

मैं बचपन हूं
मैं ढूंढ रहा हूं बच्चे,
बारिश से डूबते हुए गलियारों में,
गांव के सिरहाने बैठे तालाबों में।
लेकिन नहीं मिले बच्चे,
और मैंने भी खो दिया खुद को।

मैं बचपन हूं
मैं ढूंढ रहा हूं बच्चे,
चिड़ियों की लौटती कतारों में,
गुड्डे-गुड़ियों की बारातों में।
लेकिन नहीं मिले बच्चे,
और मैंने भी खो दिया खुद को।

मनीष कुमार शर्मा
देवघर, झारखंड
9934202359

मातृभाषा

शान है सब की मातृभाषा,
प्राण है सब की मातृभाषा।
जिस क्षण निकले कंठ से पहली बोली,
वह मिठास है मातृभाषा।
संस्कारों की नींव दे मातृभाषा,
संस्कृति की पहचान दे मातृभाषा।
शर्माते क्यों हो इसे बोलने में?
अधिकार है तुम्हारी मातृभाषा।
जुड़े भाव में मातृभाषा,
संग मिले विचारों की छाप में मातृभाषा।
बचपन की पहली कहानी ,लोरी में,
स्पष्ट झलकती मातृभाषा।
परंतु आजकल कर रहे एक दूजे से द्वेष,
केंद्र बिंदु में रखकर मातृभाषा।
अतः पट्टी हटाकर ,इन द्रोहियों से रहो दूर,
जो जोड़ते ,मातृभाषा में राजनीति की परिभाषा।

अविनाश कुमार साह
नैहाटी, पश्चिम बंगाल
9051227891

आह

आह से निकली आह तो
आह बन कर रह गई।
आह की चित्कार सुन कर
आह करुण क्रन्दन हो गई॥

आह की वेदना से हृदय छलनी हो गया
छटपटाते अधर से आह केवल रह गया।
क्या कहु कुछ कह न पाया
बस स्तब्ध होकर आह भर कर रह गया॥

सब मौन थे बस खड़े थे
देखते ही रह गये।
जब द्वार पर आई लाश उसकी
सब आह कह कर रह गये॥

चलती हुई सासे भी बस
अब आह आह कहती गई।
बुझ गया चिराग घर का
रो रो के माँ कहती गई॥

उत्तम कुमार तिवारी
लखनऊ, उत्तर प्रदेश
7452015444

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

ख्वाहिशें

ख्वाहिशें मेरे दिल में जगा देतें हैं
देखके मुझको वो मुस्कुरा देतें हैं।

दिल बहल जाता है मेरा भी दोस्तों
मुझको दीवाना अपना बना देतें हैं।

शाम हो जाती रंगी हैं मेरी बहुत
ज़ाम नज़रो से वो जब पिला देतें हैं।

रात भर ख्वाब में उनसे बातें करी
चांद तारे भी मुझको दुआ देतें हैं।

दिल में रक्खा है मैनें उन्हें इस तरह
जैसे फूलों में खुशबू छिपा देतें हैं।

उनकी महफिल में जब भी गए हम अजय
गज़लें मेरी ही वो गुन गुना देतें हैं।

अजय प्रसाद
पश्चिम बर्दवान, प. बंगाल
9006233052

मैं

हर कदम जिंदगी से नसीहतें पा रहा हूं मैं।
हर लम्हा तजुर्बों की दौलतें सजा रहा हूं मैं।

नफरतों की भीड़ से बच बच के गुजर आया हूं।
नफरती दुनिया से मोहब्बतें निभा रहा हूं मैं।

ख्वाहिशें सभी की निगाहों में लिए फिरता हूं।
खुद से ही पर अपनी हसरतें छुपा रहा हूं मैं।

शामिल सभी को करता हूं दुआओं में अपनी।
खुशनुमा दुनिया की इमारतें बना रहा हूं मैं।

सारे जहान ने शिकवे बेइंतहा किये हैं मुझसे।
खुद को ही उनकी शिकायतें सुना रहा हूं मैं।

खुश तो हर किसी को कर सका ना मैं ऐ 'शिखा'।
ख़फ़ा ना होने की आदतें बना रहा हूं मैं।

शिखा खुराना
द्वारका, नई दिल्ली-110075
8826089988

अध्याय

नित नवल इतिहास लिखूं मैं
या लिखूं प्राचीन पुरातन
वेदों की स्वर्णिम गाथा
या लिखूं अवतारों का वंदन।

राम लिखूं अध्याय आदर्शों का
रामायण कुटुंब अमृतपान लिखूं।
गीता लिखूं जीवन का सार
आन बान और शान लिखूं।

जेष्ठ पुत्र का त्याग लिखूं।
कर्तव्यों के प्रति बलिदान लिखूं।
उस शांतिदूत का शांति हेतू
रण कौशल का समग्र अभियान लिखूं।

वृतांत अग्निपरीक्षा की लिखूं।
या चिरहरण की करुण कहानी लिखूं।
भरथ का प्रेम त्याग और शील
या दुर्योधन की बेमानी लिखूं।

गांधारी लिखूं की कैकई लिखूं।
पुत्र मोह में प्राण त्याग लिखूं।
या राजसिंहाशन की चाहत में
सतपुत्रों का सर्वनाश लिखूं।

क्या छोडूं और क्या क्या लिखूं।
जीवन के मानक मूल्य या अपवाद लिखूं।
सतयुग द्वापर न सीखा सके तो तिवारी
कलयुग का कौन सा अध्याय लिखूं।

गुड़िया तिवारी
गोपालगंज बिहार
8539927014

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

सच्चाई

था वह पुराना वृक्ष
अब फल नहीं देता था,
था वह मेरे घर-आंगन में
लेकिन
तपन में शीतलता देता था,
कहते थे लोग
उस वृक्ष को हटाने का
पर
था जुड़ाव ऐसा
मन इजाजत नहीं देता था,
मिलती थी कभी सलाह
उसे दूसरी जगह स्थानांतरित करने की
पर
गहरी जड़े थी उस घर-आंगन में
शायद
टूटकर जड़ों से वह
पनप नहीं सकता था,
देखकर मेरी दुविधा
मेरे पिता चिंतित नज़र आते थे,
उस वृक्ष की जगह
अपने को वहां खड़ा पाते थे,
थे वे गलत या सही
हम सोच नहीं पाते थे,
लेकिन
उनकी सोच के मायने
आज के समय की सच्चाई को
बँया कर जाते थे।

अटल कश्यप
नैरोबी-केन्या, अफ्रीका
☎ +254-797385959

मिलने जाया करें

आप लोगों से मिलने भी जाया करें,
उनकी कुंडी कभी खटखटाया करें।

सबके तकलीफ दुख में भी साथी बनें,
इस तरह से भी होली मनाया करें।

कोई कारण खुशी का मिले जब न तो,
बेवजह भी कभी मुस्कुराया करें।

बात ऐसी करें मुस्कुरा दे कोई,
उसकी ज्यादा सुनें कम सुनाया करें।

क्यों है चिंता लकीरों में क्या है लिखा,
कल का दिन आज में मत मिलाया करें।

कुछ भी अच्छा लगे कवि की कविता में जब,
खोलकर हाथ ताली बजाया करें।

जाने कब छोड़ दे साथ ये ज़िन्दगी,
रोज़ त्यौहार 'भूषण' मनाया करें।

नरेन्द्र भूषण
लखनऊ, उत्तर प्रदेश
☎ 9415104827

पलाश के रंग

आया था कभी बहारों का मौसम
उन पलाशों में,
जब झूम के बसंती हवाओं ने उसे चूमा था।

बिखरे थे फूल....
उसके आँचल में कई
खिली धूप में चमकते रंग ने
कितनों को ललचाया था।

चांदनी बहक गई होती गर ....
बादलों ने संभाला नहीं होता
देखकर उन फूलों की रौनक
चाँद भी शर्माया था।

बिखरें फूल तो ...
पत्तों ने भी साथ छोड़ दिया
मौसमों ने भी
वँहा से गुजरना छोड़ दिया,
चांदनी ने भी अपना मुँह मोड़ लिया

हवाओं ने भी
अपना रुख मोड़ लिया
देख कर आज उसे यक़ी नहीं होता ....
ये वही पेड़ हैं पलाश का
बहारों ने हँसते रंगों...
से जिसे कभी संवारा ...
.....और निखारा था।

रजत दीक्षित "रजत"
जगदलपुर, छत्तीसगढ़
☎ 8770507589

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

कन्या पूजन

नबरात्रि पर्ब मेरे लिए बहुत महत्बपूर्ण है। पहला कारण है, दादी की याद। बचपन में उनसे प्रेरित होकर ही मैंने उपबास रखना प्रारंभ किया था। उन्हीं से ब्रत की बिधि और बिधान सीखा था। पूरे नौ दिन का उपबास तबसे रखती आ रही हूं जबसे नौ साल की भी नहीं हुई थी। जब मैं कन्या थी तभी से कंजकों को जिमाती आ रही हूं। शादी के बाद भी यही नियम चल रहा है। कितनी भी ब्यस्तता हो अथबा बीमारी भी हो तब भी कोशिश करती हूं कि नियमपूर्बक पूरे बिधि बिधान से नबरात्रि पर्ब को मना सकूं और बच्चों को भी सिखा सकूं कि इन नौ दिनों का उपबास कितना महत्बपूर्ण है ?

हर साल की तरह इस बार भी मैंने पूरे नौ दिन उपबास रखा और अंतिम दिन ग्यारह कन्याओं के लिए फ़्लैट में पूजा का खाना रख लिया साथ ही सभी कन्याओं के लिए छोटा उपहार और दस दस रुपए के ग्यारह नोट भी रख लिए। हर बार की तरह पति के साथ अनाथाश्रम आ गई। कोरोना के बाद से कंजकों का घर पर बुलाना बंद सा ही हो गया है। इसलिए अनाथाश्रम में ही कन्याओं को खाना खिलाकर आ जाती हूं। समाज का दूसरा चेहरा बहां पर देख आती हूं। आश्रम में अधिकतर लड़कियां ही हैं। कोई कूड़े के ढेर में पड़ी हुई थी तो किसी को पानी में बहाया गया था। आश्रम की बाहर बाली दीबार पर भी एक पालना लटकाया गया था जिसमें कभी भी देबी आकर बिराजमान हो जाती थी। आश्रम की शुरुबात एक सेबानिबृत दंपत्ति ने की थी। उनकी कोई औलाद नहीं थी। यही कारण था कि उन्होंने बेसहारा बच्चों को एक छत देने और एक अच्छी परबरिश देने की कोशिश में अपना बाकि का जीबन ब्यतीत कर दिया। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बो अपने गांब में रहने चले गए और आश्रम में मैनेजर सहित पूरा स्टाफ नियुक्त कर दिया।

भीड़ बहुत ज्यादा थी इसलिए मैं बाहर ही रुक गई। पति लाइन में लग गए ताकि जल्दी नंबर आ जाए। बाहर धूप थी इसलिए गैलरी में खड़ी होकर अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थी। तभी काम बाली बाइयों को घूंघट निकाले हुए दोनों हाथों में कई कई पॉलिथीन पकड़े बाहर जाते देखा। थोड़ी देर तो मैं देखती रही लेकिन जब रहा नहीं गया तो मैंने उनमें से एक को रोककर पूछ ही लिया," आज़ कुछ बिशेष आयोजन है क्या आश्रम में?" उसने घूंघट उठाया और गौर से मुझे देखा फिर तेजी से आगे बढ़ते हुए बोली," नहीं, बाई सा। खाना ज्यादा हो रहा था तो हम लोगों को बांट दिया। देबी का प्रसाद हमने मांग कर लिया है।" मेरा जबाब सुनने से पहले ही बह आश्रम के मुख्य द्वार से बाहर निकल गई। मुझे थोड़ा आश्चर्य

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

हुआ।," हजारों बच्चे हैं आश्रम में फिर खाना बच कैसे सकता है। बच भी जाए तो फ्रिज में रखा जा सकता है। बच्चे खुशी खुशी शाम को भी खा लेते हैं।" मैं मन ही मन यही सोच रही थी कि पति ने आवाज़ लगाई," मीनू, आओ जल्दी नंबर आ गया है।" मैं तेज़ी से चलती हुई आश्रम के ऑफिस में आ गई। खाने का थैला मेज़ पर रख दिया। उन्होंने रजिस्टर में नाम लिख लिया। ,"सर, मैं अपने हाथ से दस दस रुपए देना चाहती हूं। आप ग्यारह बच्चियों को बुला लीजिए।" प्रबंधक थोड़ा सकुचाते हुए बोले," विश्वास रखिए मैडम हम बच्चियों को ही प्रसाद का वितरण करेंगे।" मैंने फिर प्रार्थना की," आप गलत नहीं समझें सर। बच्चियों के रूप में मां दुर्गा के दर्शन हो जायेंगे। आपकी आभारी रहूंगी, यदि बुला देंगे तो।" आश्रम की एक महिला कर्मचारी ने मुझे अपने साथ अंदर आने का इशारा किया। मैं उसके साथ चली गई। थोड़ी दूर चलकर उसने मुझे खड़ा रहने का इशारा किया। वह बच्चियों को लाने चली गई। अपनी ऊंचाई के क्रम में बच्चियां आकर खड़ी हो गई। मैंने सबके चरण स्पर्श किए। उनके चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे। मैंने दस रुपए दिए तो चेहरे पर खुशी के भाव थे। लेकिन लग रहा था जैसे किसी और भी चीज की आशा थी। ,"प्रसाद नहीं लाई हो आंटी ?" सबसे आगे खड़ी सबसे छोटी कन्या ने सवाल किया। ," बाहर ऑफिस में दे दिया है। पहले वो लोग देखेंगे सही है या नहीं फिर तुम्हे दे देंगे।" उसने पीछे मुड़कर बाकी लड़कियों की ओर देखा। सबके चेहरे उतरे हुए थे। ," शाम को जो बचेगा वही हमें मिलेगा। अभी कुछ नहीं मिलेगा।" मैं चौंक गई। तीसरे नंबर वाली बच्ची बोल रही थी। ,"मैं ऑफिस में बात करके अभी दिलवाती हूं।" मैं चलने लगी तो वह महिला कर्मचारी बच्चियों को लेकर अंदर चली गई। "सर, कन्या पूजन दोपहर बारह बजे से पहले ही होता है। आप खाने का परीक्षण करके मुझे दीजिए मैं खिलाकर ही जाऊंगी।" मेरी बात सुनकर प्रबंधक ने घूरकर मेरी ओर देखा। ,"हां तुम खुद ही खिला दो बच्चियों को। ठंडा भी हो जायेगा।" पति ने मेरी बात का समर्थन करते हुए कहा। प्रबंधक ने अपने आजू बाजू खड़ी दोनों महिला कर्मचारियों को कुछ इशारा किया। हमारा थैला लेकर वे दोनों मेरे साथ अंदर आ गई। बच्चियों को खाना खिलाकर लग रहा था जैसे मेरी कई दिनों की भूख मिट गई हो। बाहर आई तो प्रबंधक महोदय ने अपने चश्मे को साफ करते हुए फरमान सुनाया," मैडम हम अगली बार से खाने की कोई भी वस्तु स्वीकार नहीं करेंगे। कई बच्चियां बीमार हो चुकी हैं। बेहतर होगा आप डोनेशन की पर्ची कटवा लें। ," बच्चियां किसकी बीमार हो गई सर ? आश्रम की या बाइयों की ?" मेरा सवाल सुनते ही वो कुर्सी से उठ कर खड़े हो गए। ,"आप कहना क्या चाहती हैं?" मैं बात बढ़ाना नहीं चाहती थी लेकिन उन्हें अहसास भी कराना चाहती थी इसलिए अपने शब्दों को विनम्रता से पेश किया। ,"सर, जबसे मैं आई हूं मैंने आश्रम की किसी बच्ची को कुछ खाते हुए नहीं देखा है। हां यहां के कर्मचारियों को उन थैलों को ले जाते हुए देखा है जो लोग देकर जा रहे हैं।" इस बार उनके पास खड़ी महिला कर्मचारी ने सफाई दी," मैडम वो लोग भी अपने बच्चों को भूखे छोड़कर यहां सुबह ही आ जाते हैं। क्या बिगड़ गया अगर उनके मुंह भी दो कौर पड़ गए तो।" पति ने मुझे चलने का इशारा किया। ," दो कौर नहीं भरपेट खाएं लेकिन बच्चियों के खाने के बाद। इनका खाना नहीं खाएं। ये आश्रम से बाहर कहीं नहीं जा सकती हैं। पहले इनका पेट भरना ज़रूरी है।"

मैंने कह तो दिया लेकिन मन बहुत खराब हो गया वहां जाकर। मां दुर्गा से मन ही मन मैंने शिकायत की। पति मुझे समझा रहे थे कि मेरी पूजा आज़ सफल हो गई थी क्योंकि बच्चियों ने प्रसाद का सेवन कर लिया था। परंतु लग रहा था जैसे कुछ छूट गया है। अधूरा है। पूरा नहीं किया तो गलत हो जायेगा। आश्रम के पड़ोस में जो घर बने हुए थे उनसे आश्रम बनाने वाले पुण्य आत्मा दीन दयाल जी के बारे में जानकारी प्राप्त की। पता चला कि वो लगभग हर महीने आश्रम आकर जाते हैं। पड़ोसियों को बाकि कुछ नहीं बताया बस यही कहा कि उस समाज सुधारक के दर्शन करके उन्हे प्रणाम करना चाहती हूं। दोनों पड़ोसनों से प्रार्थना की कि इस बार दीन दयाल जी आश्रम में आएं तो फ़ोन करके मुझे सूचित कर दें। यही बात आश्रम के मैनेजर से भी कही तो उनका जवाब अलग ही था। मैडम आप क्यों इतना सोच रहे हो। अनाथों को घर और खाना, कपड़ा मिल रहा है यही क्या कम है ? ज्यादा सुविधाएं देंगे तो इनका दिमाग फिर जायेगा। फिर इन्हें शादी करके दुसरे घर भी भेजना है। कोई साथ नहीं जाएगा। इनको ऐसी ही रफ टफ परवरिश की ज़रूरत है। आप भावनाओं में न बहें। अगले महीने आश्रम की दस लड़कियों का सामूहिक विवाह है। ज्यादा ही दया उपज रही है तो उस विवाह का खर्च आप उठा लेना।" कहकर उन्होंने ज़ोर से ठहाका लगाया। मैंने पलटकर कुछ नहीं कहा बस घर आ गई और आश्रम के पड़ोस में रहने वाली महिलाओं के फ़ोन का इंतज़ार करने लगी। एक दिन उन्होंने फोन पर दीन दयाल जी के आने की सूचना दी। मैं कुछ साड़ी

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

और सूट लेकर आश्रम आ गई। दीन दयाल जी स्वयं कुर्सी पर बैठे थे। मैंने उन्हें प्रणाम करके साड़ियां मेज़ पर रख दी। उन्होंने घंटी बजाकर बाई जी को बुलाया और भंडार गृह में साड़ियां रखने को कहा।

"आप जैसे दयालु लोगों के कारण इन अनाथ बच्चियों की ज़िंदगी बसर हो जाती है। आभारी हैं आपके।"

"ऐसा न कहें श्रीमान। आपने अपनी जीवन भर की कमाई इस आश्रम को चलाने में लगा दी है। मैं तो ऐसी पुण्य आत्मा के दर्शन करने ही आई हूं। आपसे कुछ कहना चाहती हूं।"

"हां हां बेझिझक कहिए।"

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

"सर, ज़माना बदल रहा है। आश्रम की लड़कियां बारह वीं तक पढ़ती हैं और शादी करके चली जाती हैं। अच्छा हो अगर उनकी आगे की पढ़ाई की व्यवस्था हो जाए। इनमें से ही कुछ लड़कियां पढ़ लिखकर आश्रम को चलाने में भी मदद कर सकती हैं।"

मेरी बात पर कुछ सोचते हुए उन्होंने कहा।

"सुझाव आपका अच्छा है लेकिन इसे अमल में लाने के लिए कोई कर्मठ व्यक्ति यहां होना चाहिए।"

"आप उचित समझें तो मैं स्वयं भी आना चाहती हूं यहां। इन बच्चियों के जीवन को और भी बेहतर करना चाहती हूं। मेरी एक दो सहेलियां भी मदद करने को तैयार हैं।"

"नेकी और पूछ पूछ। बेटा आज़ से आश्रम तुम्हे सौंप रहा हूं। बूढ़ा हो गया हूं। वैसे भी आना जाना अब संभव नहीं होता है। गांव से शहर आना मुश्किल होता है।"

कागज़ तैयार हो गए। आश्रम की बालिकाओं की व्यवस्थापक अब एक महिला को बना दिया गया। साड़ियां बड़ी लड़कियों को दे दी पहनने के लिए। शादी किए बिना भी तो साड़ी पहनी जा सकती है?

प्रबंधक महोदय कुछ और तो नहीं कर पाए बस एक हफ्ते की छुट्टी लेकर गांव चले गए।

अर्चना त्यागी
जोधपुर, राजस्थान-342011
☎ 7983481584

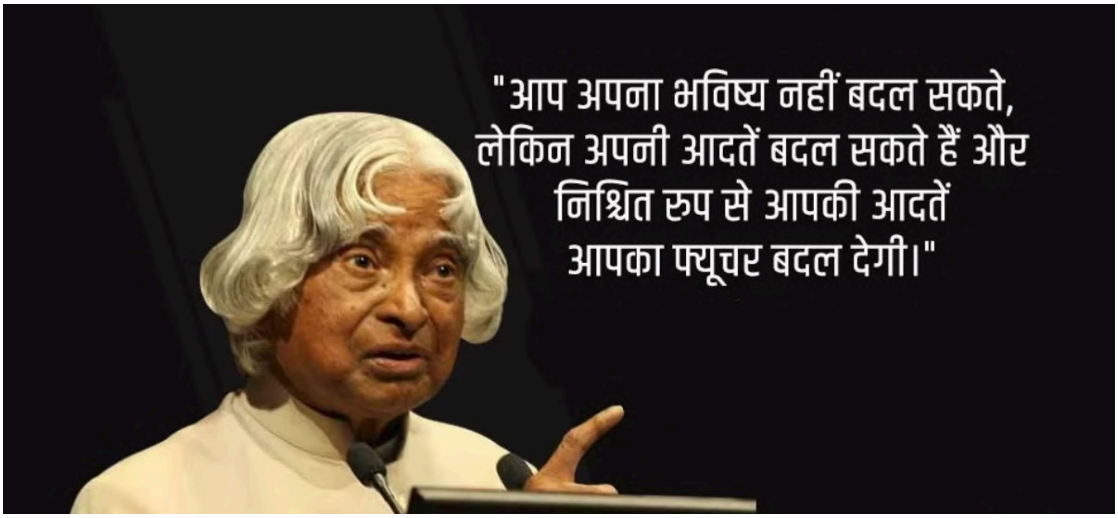

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

चुनौतियों का सामना कर समाज तक खबर पहुंचाते हैं

पत्रकार आर्यन सिंह

मैं बिगत तीन साल से मेन स्ट्रीम मिडिया में कार्यरत हूं। लेकिन बर्सतमान समय में मीडिया के समक्ष कई प्रकार की चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का भली-भांति सामना करते हुए समाज तक सही जानकारी पहुंचना एक पत्रकार की कुशलता है। पत्रकारों को इन चुनौतियों का समाना करने में कई प्रकार की समस्याएं भी झेलनी पड़ती हैं। आज के परिबेश में मीडिया का दायरा काफी ब्यापक होता जा रहा है। पत्रकारों को समाचार संकलन में कई प्रकार के बिबादों संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे हालात में एक पत्रकार के लिए समाज के समक्ष तथ्यपरक खबरें पहुंचना समाज को नई दिशा दिखाना काफी जोखिम भरा कार्य बनता जा रहा है।कहा जाए तो पत्रकारिता का इतिहास बहुत पुराना है और मुख्यधारा की पत्रकारिता की अपनी चुनौतियां हैं। अगर आप पत्रकारिता के गर्भ में जाकर ग्रामीण भारत की पत्रकारिता को टटोलने की कोशिश करेंगे तो चुनौतियों का भंडार आपके सामने होगा। ग्रामीण पत्रकारिता ऊपर से जितनी आसान दिखती है, अंदर से उतनी ही कठिन है। बर्तमान में समय के साथ-साथ ग्रामीण पत्रकारिता को थोड़ा नाम तो मिला, लेकिन संसाधनों की कमी से ग्रामीण पत्रकार जूझते रह गए।ग्रामीण इलाकों मे पत्रकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती अनियमित तनख्वाह(बेतन) है। जिसके चलते इन पत्रकारों को दो बक्त की रोटी जुटाना भी मुश्किल हो जाता है। इस लिए ग्राम के जो भी लोग पत्रकारिता से जुड़े होते हैं, बे अपनी आय के दूसरे स्रोत खोजते हैं ताकि परिवार का खर्च चलाने में मुश्किलें ना आएं। ऐसे कहने को तो पत्रकारिता को देश का चौथा स्तंभ माना जाता है, किंतु पत्रकारों को जिस प्रकार की असुबिधा का सामना करना पड़ता है उससे ना तो देश मज़बूत होगा और ना ही पत्रकारों का परिबार, आएंगी तो सिर्फ सामाजिक सुरक्षा की दरारें।कम बेतन, सामाजिक सुरक्षा एबं राजनीतिक दबाब के कारण समाप्त होती स्बतंत्रता ग्रामीण पत्रकारों को रोजाना 100 से 200 रूपये मिलते हैं"। जिससे उनका गुजर-बसर नहीं हो पाता है तो कथित तौर पर यह साफ है की बे किराना, खेती जैसे अन्य आजीबिका के साधनों पर निर्भर रहते हैं। शिक्षा के प्रसार के साथ अब गांबों में भी अखबारों और अन्य संचार माध्यमों की पहुंच हो गई है। अब गांब के लोग भी समाचारों में रुचि लेने लगे हैं। यही कारण है कि अब अखबारों में गांब की खबरों को महत्ब दिया जाने लगा है। अखबारों का प्रयास होता है कि संबाददाता यदि ग्रामीण पृष्ठभूमि का हो तो

अधिक उपयोगी होगा। हर गांव एक खबर होता है और इस एक खबर के अंदर अनेक खबरें होती हैं। पत्रकार यदि समय समय गांव का दौरा करते रहें और वहां के निवासियों के निरंतर सम्पर्क में रहे तो उन के पास कभी खबरों का टोटा नहीं होगा। गांव के नाम पर कई पत्रकार नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं मगर ऐसा ठीक नहीं। माना गांव में पत्रकारों को वह सब नहीं मिलता जो शहरों में मिलता है। अगर आप को गांव जाने का चस्का एक बार लग गया तो फिर आप के लेखन की दिशा ही बदल जाएगी।सामान्य रुटीन समाचारों के अतिरिक्त गांव में समाजिक सरोकारों से जुड़े ऐसे समाचार होते हैं जो पाठकों को नया अनुभव देते हैं। समय-समय पर गांवों में विभिन्न सरकारी योजनाएं चलती रहती हैं इन याजनाओं से गांवों में आए बदलाव के साथ साथ योजना में भ्रष्टाचार के समाचार भी गांव के हित में होते हैं। अगर इन योजनाओं पर पत्रकार पैनी नजर रखेंगे तो योजना का जो लाभ मिल रहा है वह और अधिक मिलने लगेगा क्यों कि जब योजना लागू करने वालों को पता चलेगा कि इस पर पत्रकार की नजर है तो वह गलत काम करने से पहले सोचेगा और गलत काम करने से बचेगा।

आर्यन सिंह राजपूत
सीवान-841226, बिहार
☎ +91 9709504266

सरकारी नौकरी का वर्चस्व

हमें बचपन से ही सपना दिखाया जाता है कि बड़ा सरकारी अफसर बनना है और अक्सर बच्चे 12वी या ग्रेजुएशन करने के दौरान ही इस कॉम्पिटेटिव दुनिया में कदम रख देते हैं। शुरुआती दिनों में बहुत आनंद महसूस होता है सभी बच्चे अपना सौ प्रतिशत देकर जी जान से पढ़ाई करते हैं, देखते-देखते कई साल बीत जाते हैं उनकी बेसिक एजुकेशन पूरी हो जाती है।

तीन दोस्त थे पोम्मी , भानु , और रमा। वे सुबह 9:00 बजे इंस्टिट्यूट में पहुंच जाते थे और पूरा दिन वहां पढ़ते रहते ' कह सकते हैं कि वह उनका दूसरा घर था '।

इसी बीच कोरोनावायरस का आतंक पूरे देश में फैल गया, वाहनों की गतिविधि पर रोक लगा दिया गया। भानु का घर दूर होने की वजह से वह पढ़ने नहीं आ रहा था इसलिए पोम्मी और रमा ही पढ़ने जाते और भानु घर में ही बैठ कर पढाई करता,

रात को तीनों वीडियो कॉल पर जनरल अवेयरनेस की पढ़ाई करते और एक-दूसरे को समझा देते। तीनों ने RRB की फॉर्म भरी भानु ने PO , पोम्मी और रमा ने CLERK की।

पोम्मी को RRB की नौकरी नहीं करनी थी परंतु दोस्तों के कहने पर वह फॉर्म भर दी थी यह तीनों की पहली परीक्षा थी, पोम्मी बेफिक्र थी उसे परिणाम कि चिंता ना थी।

दिन बीतता गया, पोम्मी को एहसास नहीं था कि वो परीक्षा में सफल होगी इसलिए वह MAINS की तैयारी नहीं कर रही थी और ना ही भानु और रमा।

अचानक एक दिन उनका परिणाम आया , तीनों ने परीक्षा में सफलता हासिल कर ली थी, अब उनके अंदर पढ़ने का जुनून आ गया था।

पोम्मी और रमा एक साथ पढ़ते, रमा शाम को 5:00 बजे घर चली जाती लेकिन पोम्मी रात के 8:00 तक पढ़ती रहती और 8:30 तक घर जाती; भानु भी बहुत ही जोर-शोर से अपने घर पर पढ़ता।

इनके MAINS की परीक्षा परिणाम घोषित होने के 1 महीने बाद ही गुवाहाटी शहर में थी। देखते ही देखते एक महीना गुजर गया , वे परीक्षा देकर आ गये।

1 जनबरी को परिणाम आया और बदनसीबी ऐसी की तीनों 0.25 , 0.75 , और 0.50 से असफल रहे । जिस दिन सारी दुनिया नए बर्ष की खुशियां मना रही थी बहीं बे तीनों हताश निराश होकर रो रहे थे।

उनमें हिम्मत नहीं थी उठ खड़े होने की , फिर से कलम उठाने की , शून्य से शुरु करने की। कुछ दिनों बाद बे हिम्मत कर फिर से पढ़ने गए, दिन गुजरता गया किसी का PRELIMS निकलता लेकिन MAINS नहीं और पोम्मी की हालत तो दिन प्रतिदिन बदत्तर होती चली गई; उससे prelims तक नहीं निकल पा रहा था। उम्र भी बढ़ती जा रही थी उसे सारी उम्मीदें टूटती हुई नजर आ रही थी । माता- पिता के चेहरे पर उदासी उसके आत्मबिश्वास की नींब को झकझोर रही थी अब धीरे- धीरे पोम्मी भी हार मानने लगी थी।

दिन गुजरता गया देखते ही देखते रमा की नौकरी SBI PO में हो गई; भानु और पोम्मी बहुत खुश हुए , लेकिन पोम्मी अब अकेले पर गई; अकेले पढ़ना मुश्किल हो गया लेकिन उसने हार नहीं मानी। भानु भी गुजरात जाकर प्राइबेट नौकरी करने लगा ; पोम्मी अब भी पढ़ती रही।

उसके दोनों मित्र नौकरी कर रहे थे पर पोम्मी अब भी बेरोज़गार ही बैठी थी। उसे कुछ भी सुझ नहीं रहा था लेकिन एक बात समझ आ गई थी कि कभी भी किसी नौकरी को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए।

ऐसा नहीं था कि बह BANKER ही बनना चाहती थी उसे केबल आत्मनिर्भर बनना था

उसकी रुचि मेडिकल सेक्टर में थी बह डॉक्टर बनना चाहती थी परंतु घर के हालात ठीक ना होने की बजह से उसका बह सपना, सपना ही रह गया। पहले तो बह बिना मन के banking कि पढ़ाई कर रही थी लेकिन बढ़ते उम्र के साथ उसे यह एहसास हुआ कि अब इसे भी ना किया तो यह भी हाथ से निकल जाएगा। उसने बहुत मन लगाकर पढ़ाई की पर बह सफ़ल ना हो पाई।

उसके पिता प्राइबेट नौकरी के लिए नहीं मानते और ना ही बिजनेस करने देते इसलिए उसने छिप - छिपाकर बिजनेस करने का सोचा; लेकिन यह उतना भी आसान नहीं था। उसने seeds & chemical का लाइसेंस लेने का प्रयत्न किया।

लगभग ग्यारह महीने बाद उसको सफलता मिली और उसने अपने बिजनेस की शुरुआत की।

एक दिन पोम्मी सोचती है कि क्या से क्या हो गया ; उसका लक्ष्य डॉक्टर बनना था लेकिन उसने पढ़ाई बैंकिंग की- की और अब बिजनेस कर रही है

तीनो दोस्तों ने पढ़ाई एक ही जगह की, पर किस्मत उनको बहां ही ले गई जहां उनका जाना तय था इसलिए हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए।

मैं उन माता- पिता से कहना चाहती हूं जो अपने सपने अपने बच्चों के कंधे पर लाद देते हैं और उन पर दबाब देते हैं एबं उन्हें डिमोटिबेट करते हैं:

नसीब में क्या है किसको पता
गर पता होता तो कोई फांसी ना लगाता
हम बच्चे हार ना मानते
अगर माता- पिता के चेहरे पर उदासी ना छाता।।

नेहा चौरसिया
तिनसुकिया (असम)
☎ 9101510360

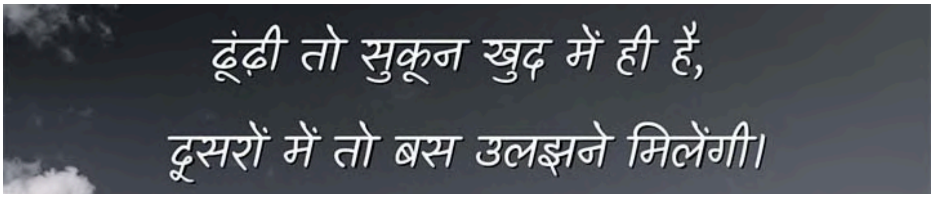

रोजाना बड़ी मात्रा में स्लो पॉइजन का सेवन

आज के आधुनिक युग में मनुष्य ने जितनी तरक्की की है, उतना ही स्वास्थ्य से खिलवाड़ भी हुआ है और वक्त के साथ यह लगातार बढ़ रहा है, जिसका कारण मनुष्य स्वयं हैं। हृदय रोग, मस्तिष्क आघात, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां तेजी से बढ़ रही है, साथ ही मधुमेह, रक्तचाप, मोटापा, कमजोरी, आहार में पोषक तत्वों की कमी की समस्या तो चरम पर है, इस वजह से असमय मौत का आंकड़ा दिन-ब-दिन बढ़ रहा है, कुछ पल पहले एकदम स्वस्थ नजर आनेवाला व्यक्ति, बड़ों से लेकर छोटे-छोटे बच्चे भी खेलते या व्यायाम करते हुए या बैठे-बैठे भी गश खाकर गिरते है और पता चलता है कि मौत हो गयी। एक दशक पहले जो जानलेवा बीमारियां हमें केवल कभी-कभार ही सुनने मिलती थी, अब वो बीमारियां रिश्ते-नातेदारों, आस-पड़ोसियों और हमारे घर-परिवार के लोगों तक पहुंच चुकी हैं। मनुष्य का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बेहद कमजोर हुआ है, मौसम के करवट लेते ही बीमारियां तुरंत जकड़ लेती हैं। हमारे देश में औसत आयु दर पाश्चात्य देशों की तुलना में लगातार गिर रही हैं। विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2024 में 143 देशों में से भारत को 126वां स्थान दिया गया। भारत खुशी के मामले में पाकिस्तान, लीबिया, इराक, फिलिस्तीन और नाइजर जैसे देशों से भी पीछे हैं। कभी इस समस्या पर गंभीरता से विचार किया है कि बीमारियां तेजी से क्यों बढ़ रही है? क्या वजह हो सकती है? स्वस्थ जीवन जीने के लिए क्या हमें रोज शुद्ध ऑक्सीजन, स्वच्छ पानी और पोषक आहार पर्याप्त मात्रा में मिल रहा है?

प्रदूषण और अस्वच्छता हमारी सांसे छीन रही हैं। वायु गुणवत्ता सूचकांक 2024 आंकड़ों के अनुसार, विश्व के उच्चतम पांच सबसे ज्यादा प्रदूषित देशों में भारत देश हैं। भारत का लगभग 70 प्रतिशत जल प्रदूषित है, तथा देश की लगभग आधी नदियाँ पीने या सिंचाई के लिए असुरक्षित है, इस कारण 2024 के वैश्विक जल गुणवत्ता सूचकांक में 122 देशों में से भारत 120वें स्थान पर हैं। 2023 में बीएमजे में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि भारत में हर साल 2.18 मिलियन मौतें बाहरी वायु प्रदूषण के कारण होती हैं। लैंसेट 2019 में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि भारत में 500,000 से अधिक मौतें जल प्रदूषण के कारण हुई। बड़े पैमाने पर देश में हजारों करोड़ रुपयों का नकली दवाइयों का कारोबार चलता है, बड़े-बड़े सरकारी अस्पतालों में तक नकली दवाइयाँ मरीजों को बांटी जाती हैं। एशिया के बड़े अस्पतालों में शामिल महाराष्ट्र राज्य के नागपुर में स्थित सरकारी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल में यह घटना हाल ही में उजागर हुयी।

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

अन्न उगाने से लेकर हमारे थाली में परोसने तक उसे अनेक हानिकारक रासायनिक प्रक्रियाओं से गुजारा जाता हैं। देश में अशुद्ध खान-पान और अस्वच्छता की समस्या बहुत ही ज्यादा है, लोग स्वार्थ और लालच में इतने अंधे हो चुके है, कि अपने एक रुपये के फायदे के लिए भी लोगों को जहर खिलाने तैयार हैं। देश के 68.7 प्रतिशत दूध और दूध उत्पादों में प्रदूषक पाए गए है। तेल, घी, शक्कर, नमकीन, मैदेयुक्त खाद्यपदार्थों की मांग अत्याधिक होती है, जबकि यह सेहत पर बेहद बुरा असर करते हैं। शहद, मसाला, चाय पत्ती, तेल, दूध, मिठाइयां, घी, केसर जैसे खाद्यपदार्थों में मिलाबट बहुत ज्यादा हैं। बाहरी खाद्य पदार्थों के रंग बहुत ज्यादा तेज और आकर्षित नजर आते है, अधिकांश खाद्य पदार्थों को रंगने के लिए प्राकृतिक रंगों के स्थान पर हानिकारक कृत्रिम रंगों का उपयोग किया जाता है, खाद्य पदार्थों में इस्तेमाल होने बाला बाहरी बर्फ, पानी, चटनियां, सॉसेज, खाद्यतेल गुणबत्ता की कसौटी पर अधिकतम खरी नहीं उतरतीं। देश के अधिकतर स्ट्रीट फूड बिक्रेताओं को खाद्य सामग्रियों में बिना दस्तानों के सीधे हाथ लगाने की बहुत बुरी आदत नजर आती है, इसका खामियाजा ग्राहकों के स्वास्थ्य को भुगतना पड़ता हैं। जो पशुओं के लिए भी ठीक नहीं, बह खाद्य अर्थात घातक कचरा मनुष्य स्वाद लेकर खा रहा हैं। देश में ज्यादातर खाद्य पदार्थों को पैक करने और लपेटने में अखबारों का इस्तेमाल किया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। एफएसएसएआई के अनुसार, खाद्य पैकेजिंग सामग्री के रूप में शोषक कागज के बजाय समाचार पत्रों के व्यापक उपयोग के कारण भारतीयों में धीरे-धीरे बिषाक्तता फैल रही हैं। मैदा रासायनिक रूप से प्रक्षालित (जहरीला) होता है, इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स उच्च होता है जिससे टाइप 2 डायबिटीज हो सकता है, इसमें फाइबर की कमी के कारण यह पाचन तंत्र में बाधा डालता है। खाद्य तेल का व्यापक स्तर पर पुनर्चक्रण कर जंक फूड तैयार किया जाता है, तेल को बार-बार गर्म करने से लिपिड का ऑक्सीडेटिब बिघटन होता हैं। दोबारा गर्म किए गए तेल से बने भोजन का लंबे समय तक सेबन करने से व्यक्ति के एंटीऑक्सीडेंट रक्षा नेटबर्क पर गंभीर असर पड़ सकता है, जिससे उच्च रक्तचाप, मधुमेह और संबहनी सूजन जैसी बिकृतियां पैदा हो सकती है, आगे चलकर यह जानलेबा बीमारियों का कारण बनते हैं। जंक फूड या बाहरी फूड से उच्च कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग, मधुमेह, गुर्दे की क्षति, मोटापा, यकृत रोग, कैंसर, दंत क्षति, अबसाद, पेट संबंधी बिकार, त्वचा संबंधी रोग जैसी समस्याओं की संभाबना बढ़ती हैं। पैक्ड फूड, पेय के कारण हम माइक्रोफ्लास्टिक का सेबन कर रहे हैं। भारत में 56 प्रतिशत बीमारियाँ अस्वास्थ्यकर आहार से संबंधित हैं। आयुर्बेद कहता है कि, यदि आहार सही नहीं है तो स्वास्थ्य सुधारने के लिए दबा भी काम नहीं करती। स्ट्रीट फूड शेफ या खाद्यपदार्थ बिक्रेता सरकारी निर्देशों का कड़ाई से पालन करें। अपने हाथ स्वच्छ धोएं, स्वच्छ बर्तन ब उपकरण का प्रयोग करें, दुकान पर स्वच्छता बनाए रखें, कच्चे और पके भोजन को अलग रखें, खाद्यपदार्थ तैयार करने के लिए पीने के पानी का उपयोग करें। धुले हुए साफ कपड़े पहनें, खाद्यपदार्थ बनाते और परोसते समय दस्ताने और एप्रन पहनें। काम करते समय अपना चेहरा, बाल ढकें और अपने चेहरे, सिर, बालों को या शरीर में अन्य कही भी छूने या खरोंचने से बचें। नाखून कटे हुए और साफ रखें। खाद्य पदार्थों को सुरक्षित तापमान पर रखें, बेहतर ब अच्छे गुणबत्ता के कच्चे माल का चयन करें, स्थानीय सरकारी नियमों के अनुसार कचरे का योग्य निपटान करें। तलने के लिए एक ही तेल का पुनर्चक्रण न करें, खाद्यपदार्थों को ढककर रखें, बांसी खाद्यपदार्थों की बिक्री न करें। इन नियमों का पालन सख्ती से होना चाहिए। भले ही स्वच्छता और गुणबत्ता के लिए थोड़ा पैसा ज्यादा खर्चना पड़े, लेकिन सेहत से खिलबाड़ न हों। हमें मरने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है, हमारा आसपास का बाताबरण और हमारी जीबनशैली ही है जो हमें असामयिक मृत्यु की ओर तेजी से ले जाती है। देश में बहुत से बायरल फूड बीडियो, खबरों से भी खाद्य पदार्थों में गंदगी, घटिया गुणबत्ता बाली खाद्य सामग्री, घातक रासायनिक प्रक्रिया, बिषैले रंग और मिलाबटखोरी की जानकारी मिलती हैं। बंद कमरों में तैयार होने बाले बहुत से खाद्य पदार्थों की गुणबत्ता पर संदेह निर्माण होता है, फिर भी सड़कों पर, रेल्बे, बस अड्डों और सार्बजानिक स्थानों पर बह खाद्यपदार्थ धड़ल्ले से बिकते हैं।देश में बड़ीमात्रा में मिलाबटखोरी के साथ ही नकली कंपनी के

खाद्य व पेय पदार्थ भी खूब बिकते हैं। अपनी और अपनों की सेहत की जिम्मेदारी हमारी स्वयं की है, जबान के स्वाद के लालच में अपने अमूल्य स्वास्थ्य को दांव पर न लगायें। घर के खाने को प्राथमिकता दें, रोजाना व्यायाम, पर्याप्त नींद, स्वच्छता और पौष्टिक आहार का ध्यान रखें। गर्म पेय-खाद्य हेतु प्लास्टिक और मुद्रित रद्दी पेपर का प्रयोग बिलकुल न हों। बासी खाना, तली, मसालेदार, मीठी, मैदायुक्त, कृत्रिम रंगयुक्त, पैक्ड फूड, रासायनिक प्रक्रिया से गुजरने वाले खाद्यपदार्थों से दूरी बनायें। सफर में या बाहर जाते वक्त जरूरत हो तो घर से ही पीने का पानी और भोजन साथ लेकर चलें। स्वास्थ्य ही संपत्ति है, सेहत संभाले, निरोगी जीवन जियें।

डॉ. प्रितम भि. गेडाम
नागपुर (महाराष्ट्र)
☎ 8237417041

क्या अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ?

है अंधेरा, मगर दीपक जलाना कब मना है? बिपरीत परिस्थितियों में जब हम स्वयं को अकेला मानते हैं तो हमारी नजरें किसी सांत्वना देने बाले व्यक्ति को, किसी सहयोगी को,या किसी मित्र को ढूंढने लगती हैं और हम सोचने लगते हैं कि हमारे आसपासहमारी मदद करने बाला कोई क्यों नहीं है?

लगता है ईश्वर ने सारी मुसीबतें हम पर ही डाल दी हैं।

मित्रों, जीबन सुख - दुख का ही दूसरा नाम है। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन अबश्यम्भाबी है।

अत: दुख में स्वयं को अकेला मानने का निराशाबादी स्वर भुला देना ही श्रेष्ठ होता है। किसी सत्पुरुष के आने की प्रतीक्षा करने से ही समय बदलेगा-

यह भाब मन में उत्पन्न न करके यह बिश्वास कि अकेले होते हुए भी आप स्वयं दुख की स्थिति से पार उतर सकते हैं- यह बिचार मन में लाना बहुत आबश्यक है। एकला चलो रे.. यह पंक्ति प्रेरणा बन जाती है जब आप दृढ़ बिश्वास और मजबूत इरादे से किसी भी कार्य में जुट जाते हैं। साहित्य और इतिहास ऐसे कई उदाहरणों से परिपूर्ण है। जैसे-

राजस्थान के एक गांब पिपलांत्री में दुनिया की सबसे बड़ी संगमरमर की खाने हैं।

सन 2005 की बात है - संगमरमर की खानों के 900 फीट खुदाई होने के कारण पूरे के पूरे इलाके में पेड़ खत्म हो गए,जंगल खत्म हो गए,खेती खत्म हो गई, पानी 900 फीट के भी नीचे चला गया। श्याम सुंदर पालीबाल नामक व्यक्ति को बहां का सरपंच बनाया जाता है। उनकी एकमात्र पुत्री मई- जून की भीषण गर्मी के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। निराशा की स्थिति में श्याम सुंदर जी अपनी बेटी की याद में 1सौ11 पेड़ लगाने का अभियान शुरू करते हैं। इसके साथ ही सरपंच होने के नाते बे गांब में यह परंपरा शुरू करते हैं कि जिस घर में भी बेटी होगी उस घर का व्यक्ति 111 पेड़ लगाएगा। यह दुनिया का अकेला ऐसा गांब है जहां बेटी के जन्म पर 111 पेड़ लगाए जाते हैं। सारे गांब में इतनी मित्रता और अपनत्ब का भाब हैकि बे सभी इकट्ठे होकर 21000 रुपये एकत्र करते हैं और जिस घर में बेटी पैदा होती है उससे ₹10000 लेकर 31000 रुपये की उस बेटी के नाम 15 साल के लिए एफ.डी करते हैं। बहां किसी भी व्यक्ति की मृत्यु की स्मृति में 11 पेड़ भी लगाए जाते हैं। अकेले श्यामसुंदर जी ने जब यह प्रयास शुरू किया तो गांब में यह प्रथा ही बन गई। आपको जानकर आश्चर्य

होगा कि वह बेटी उन सभी पेड़ों को अपना भाई मानती है और राखी के अवसर पर वहां सभी पेड़ों को राखी बांधी जाती है। यह अप्रतिम दृश्य अकेले व्यक्ति के प्रयासों से ही तो संभव हो पाया। इन प्रयासों के कारण ही उस गांव में जहां पानी का स्तर जो 900 फीट गहरा था आज 50 फीट पर आ गया है। आज वहां 3 लाख से ज्यादा पेड़ हैं।

मित्रों, क्या आप जानते हैं कि जब से हम पैदा होते हैं और दुनिया से जाते हैं -- तब तक हम इतनी लकड़ी का प्रयोग करते हैं जितना 22 पेड़ों के काटने के बराबर होती है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अकेले व्यक्ति को ही पेड़ लगाने के अभियान से जुड़ना होगा। कर्नाटक में टीकम्मा नामक स्त्री ने जो 113 वर्ष की थी, उन्होंने अकेले 8000 वृक्ष लगाए थे जिसके कारण भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया था। निराशा की परिस्थितियों में ऐसे असंख्य उदाहरण आपको आशावादिता की ओर बढ़ा सकते हैं। अतः यह स्वीकार कीजिए कि आप समर्थ हैं,आप परिवर्तन की क्षमता रखते हैं, इसलिए निराशा के बादलों से बाहर आइए और आशावान होकर परिवर्तन कीजिए।

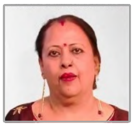

प्रेमलता चाँदना, दिल्ली
☎ 9868176746

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

"देहाती कहीं के"

दिल्ली, मेरे ख्वाबों और मेरी आरजुओं का शहर। दिल्ली, जो कभी `दिलवालों की दिल्ली' के नाम से मशहूर हुआ करती थी। वही दिल्ली अब ओपेन गैस चैम्बर के नाम से भी जानी जाती है । दिल्ली, जो सुल्तानों की लूट से लेकर शायरों का महबूब शहर हुआ करता था।जिस दिल्ली के बारे में उस्ताद शायर साहब ठंडी आह भरकर कहा करते थे "कौन जाए जौक,दिल्ली की गलियां छोड़कर"।उसी दिल्ली में तन -मन की बदहाली के बाद मुझ जैसे कलमकार को डॉक्टर का हुक्म हुआ कि "हवा पानी बदलो। दिल्ली से कम से कम सौ किलोमीटर दूर चले जाओ।तो शायद बच जाओ और सौ साल तक जियोगे। नहीं प्रदूषण के पंजे में आ गए तो खांस –खांस कर ज़िंदगी की ख़ुशहाली पर झाड़ू लग जायेगी । दिल्ली की हवा अब जानलेवा गैस बन चुकी है और पानी में इतनी गंदगी व्यापत हो गई है कि नयनाभिराम कमल खिलने के बजाय बजबजाती हुई जलकुंभी ही अटी पड़ी रहती है ।सो बेहतरी इसी में है कि कुछ वक्त के लिए पहाड़ या गांव चले जाओ"।

डॉक्टर की तजबीज "पहाड़ या गांव" वाली बात मेरे दिमाग मे कुलबुलाने लगी।

दिल्ली के आसपास की जो पहाड़ वाली जगहें थीं वहाँ के ठहरने का किराया पहाड़गंज के होटलों से भी महंगा था। और रहा सवाल गाँव का तो ? दिल्ली के जिस इलाके में अपना जीवन गुजार रहा था वह गांव ही कहलाता था। ऐसा इलाका जहां बिल्डिंग्स और महंगाई आसमानी थी फिर भी नाम था गांव यानी उत्तराखंड के महंगे पहाड़ और यश चोपड़ा की फिल्मों वाला पंजाब का गाँव ,दोनों ही मेरी पहुंच से बाहर थे। सो मैंने अपने ही पुश्तैनी गांव की राह ली जो कि यूपी के अवध की तराई में था । यूपी का वही गांव जिसमें मैं पैदा तो हुआ था पर कभी रहा नहीं था । और जिससे मुझे एक अनजानी चिढ़ थी दिल्ली में रहते हुए भी। उन्हीं गांव वालों के घर जा रहा था जो दिल्ली में अपनत्व के कारण यूँ ही अकारण हमसे मिलने चले आते थे ।पर उन्हें देखकर मैं जल-भुन जाया करता था और उनके रहन -सहन तथा पहनावे को देखकर कहता था

"देहाती कहीं के"

अचानक दिल्ली से गांव जाने के लिए रेल आरक्षण मिलना मुश्किल था । दिल्ली के नकली गांव से अपने असली गांव जाने के लिए मैनें अपना सामान पैक किया दिल्ली को हसरत भरी निगाह से देखकर एक मारूफ शायरा का शेर पढ़ा -

"कुछ तो तेरे मौसम ही मुझे रास कम आये ,
और कुछ मेरी मिट्टी में बगाबत भी बहुत थी " ।

दिल्ली के रेलबे स्टेशन से ट्रेन में सीट न मिलने की बजह आनंद बिहार से यूपी रोडबेज की बस पकड़ी और फिर बस अड्डे से बस के बाहर आते ही "बेलकम टू यूपी"। रात भर के सफर के बाद सुबह -सुबह ही मैं अपने गांब पहुँच गया। बही गांब जिसका रेशा - रेशा खुरच कर अपने बजूद से मैं काफी पहले ही उतार चुका था । उतारना क्या ? बास्तब में दिल्ली में पले-बढ़े होने के कारण गंबई रंग और देहातीपन मैंने खुद में कभी आने ही नहीं दिया था। मुझे तो दिल्ली के अपने उस इलाके से भी चिढ़ हो जाती थी जब साइनबोर्ड पर इलाके के नाम के आगे गांब लगता था ।मैं मन ही मन बुदबुदाता "हे भगबान, ये दिल्ली जो कॉलोनी और पुरी के उपनामों से भरी हुई थी। बहाँ पर मेरे हिस्से में गांब का ही निबास आना था"। जिस गांब शब्द से ही मुझे इतनी चिढ़ थी आज मैं उसी गाँब की पनाह में था। गांब, गंबईपन, ग्रामीण और देहातीपन से मुझे एक खास किस्म की खीझ रहा करती थी। बैसे अब दिल्ली से भी खासी बेजारी थी। सो गांब में मन लगने के आसार थे मगर गांब के अपने रंग -ढंग भी थे। गांब पहुंचा तो कुल -खानदान के लोगों ने आत्मसात कर लिया। बही गांब जो मेरे लिए शर्म था मगर गांब के अपने कुनबे के लोगों के लिये अब मैं गर्ब था। गांब में मुझे मिले रामजस काका जो मेरे ही समबय थे मगर रिश्ते में काका लगते थे। बह पैदा तो मुंबई में हुए थे और शुरू के कुछ बर्षों तक मुंबई के कान्बेंट स्कूल में पढ़े थे मगर बाद में समय का चक्र ऐसा घूमा कि उनके जीबन के अगले तीन दशक गांब में ही बीते और अब गांब में ही रम गए थे। पहले ग्राम प्रधान हुआ करते थे मगर फिलबक्त सात बोटों से प्रधानी हार गए थे। बह जान गए कि मैं अचानक गांब आया हूँ तो जरूर सब कुछ सामान्य नहीं है। बह रहते तो गांब में थे मगर उनके अंदर का शहर उनके जेहन और जीबन से निकल नहीं पाया था। मेरे स्बास्थ्य की समस्या के बारे में जानकर उन्होंने मुझे तसल्ली दी कि शुद्ध हबा, पानी ,भोजन का प्रबंध तो बह कर देंगे मगर गांब की पॉलिटिक्स और परसेप्शन में अगर मैं उलझा तो मैं शहरों के रास्तों से ज्यादा कन्फ्यूज हो जाऊंगा। गांब का अपना रंग-ढंग और चलन होता है। आज के गांब न तो यश चोपड़ा की फिल्मों की तरह सुंदर और हरे-भरे हैं और न ही मैथली शरण गुप्त के "अहा ग्राम्य जीबन भी क्या है " की तर्ज पर सहज-सरल रह गए हैं। गांब में खूंटा और नाली के बिबाद के मुकदमे ढोते -ढोते दो पीढियां गशत हो जाती हैं। गांब में सब कुछ सहज -सरल नहीं होता यहाँ की बौद्धिक जुगाली "लुटियंस जोन" के स्तर की होती है । जिस तरह बहाँ एक ड्रिंक पर सरकार बनाने या गिराने के दाबे किए जाते हैं बैसे ही गाँब में जो बंदा कभी जनपद मुख्यालय से बाहर नहीं गया हो बह देश के किसी भी सेलेब्रिटी और बीआईपी से अपनी अंतरंगता के किस्से सुना सकता है । मैंने उनकी बातों को सजगता से सुना और गांठ बांध ली कि किसी भी घटना या बक्तब्य पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी है ।न ही अच्छी और न ही बुरी बस तटस्थ रहना है । अलसुबह मुझे रामजस काका अपने साथ घुमाने निकले। उन्होंने कहा "गाँब में कोई मेरा नाम नहीं लेता। बहुत सारे लोग मुझे रामजस के शार्ट फार्म में आरजे बुलाते हैं। कुछ लोग प्रधान जी भी कहते हैं। आओ तुम्हे गाँब के कुछ रंग-ढंग और परशेप्शन बताता हूँ " ।

मैंने हैरानी से उनकी तरफ देखा तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा –

गांब में अगर तुम्हारे जैसे महानगर से आया हुआ आदमी महीने भर से ऊपर ठहर जाए तो गांब बाले यही समझेंगे कि इस आदमी की नौकरी चली गई है। भले ही तुम्हारे खर्चों में उन्हें कोई कटौती नजर न आये मगर बह तुम्हे बेरोजगार ही समझेंगे। अपने को लेकर मैं कुछ जबाब दे पाता इससे पहले उन्होंने आगे कहा -

और अगर रोज सुबह दौड़ने निकल जाओ तो गांब के लोग मान जाएंगे कि इस बंदे को शुगर हो गया है । यहाँ सुबह की दौड़ को फिटनेस से नहीं बल्कि शुगर से जोड़ा जाता है। अब तो मुझे भी उनकी गंबई बातों में दिलचस्पी आने लगी। मुझे मुस्कराते हुए देखकर उन्होंने उत्साह से आगे कहा –

" अगर कम उम्र में ही ठीक- ठाक कमा कर औऱ लौट कर गांब में पर्याप्त खर्चा करने बाले इंसान के बारे में आधा गाँब मान लेता है कि शहर में जरूर यह आदमी दो नंबरी काम करता होगा।और अगर उस इंसान ने जल्दी शादी कर ली तो गांब में यह आम धारणा बन जाती है कि उस शख्स का बाहर कुछ इंटरकास्ट चक्कर चल रहा होगा इसीलिए घर बाले फटाफट शादी कर दिए"। यह बात भी मुझे काफी मजेदार लगी।

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

रामजस काका ने मुस्करा कर कहा " अगर लड़के की नौकरी लगी है और लड़का किसी बजह से शादी में देर कर रहा है तो लोगों का मेन आक्षेप यह रहेगा कि या तो लड़के के घर में बरम है या तो लड़का मांगलिक है। लोग बाग किसी गृहदोष या हैसियत से ज्यादा दहेज मांगने की बातें बनाने लगते हैं"। मुझे उनकी बातों में काफी लुत्फ आया।

रामजस काका ने उनकी बातों से मुझे मिले लुत्फ को भांपकर आगे कहा -

"और अगर कोई शादी बिना दहेज़ का कर लिये तो ज्यादातर गांब में कहेंगे कि लड़की प्रेगनेंट थी पहले से ही इज़्ज़त बचाने के चक्कर में लब मैरिज को अरेंज मैरिज में कन्वर्ट कर दिये लोग"। रामजस काका की इस बात से मुझे काफी मजा आया। गांब की पहली सुबह में ही सतत मुस्कान मेरे अधरों पर खेलने लगी थी।

रामजस काका ने कहा -

"गांब के युबकों के बारे में दो चार मजेदार बातें और सुनो जिनसे बो दो -चार होते हैं। पहला अगर कोई युबक खेत के तरफ झाँकने नही जाता तो गांब में लोग कहते हैं कि अभी बाप का पैसा है तभी उधर खेत -बेत झांकने नहीं जाता।दूसरे कुछ बरस बाद जब गांब बालों के तानों से आजिज होकर बही लड़का खेती -किसानी में रुचि लेने लगता है तब लोग कहते हैं कि देखा धीरे -धीरे चर्बी उतरने लगा है"। यह बिरोधाभास सुनकर मेरी हंसी छूट गई।

रामजस काका ने भी हंसते हुए कहा —

"ज्यादा हंसो मत। तुम जैसे शहर से गांब लौटे लोगों के बारे में भी आमतौर गाँब के लोग क्या समझते हैं ?यह भी सुनो ध्यान से।अगर महानगर से मोटे होकर गांब आये तो गांब में यह आम राय होती है कि जरूर यह बंदा शहर में बीयर पीता होगा। और कहीं बंदा दुबला होकर गांब आये तो मान लेते हैं जरूर बंदा शहर में गांजा- चिलम पीता रहा होगा तभी उसे टीबी हो गया है और अब अपनी सेहत सुधारने गांब आया है। मुझे अपनी दुबली-पतली सेहत का ख्याल आया तो थोड़ा अजीब भी लगा कि गाँब में लोग मुझे चिलमची या टीबी का मरीज समझेंगे।

रामजस काका ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा "और सुनो, अगर बाल बढ़ा के गांब लौटो तो गांब में काफी सारे लोगों को लगता है यह बंदा किसी ड्रामा कंपनी में नचनिया का काम करता है। हालांकि अपनी दरबाजे पर होने बाली नौटँकी नाच को भी गांब बाले आर्केस्ट्रा कहते हैं और बहीं दूसरा कोई किसी बड़े आर्केस्ट्रा में भी काम करे तो उसे नचनिया पुकारेंगे।कुल मिलाकर गाँब में बहुत मनोरंजन है। यहां कोई डिप्रेशन में नहीं आता और ये बतकहियां ही मनोचिकित्सक का काम करके मन की पीड़ा सोख लेती हैं"। तब तक किसी ने उधर से कहा "गुड़ मॉर्निंग आरजे। हू इस दिस कूल ड्यूड बिथ यू" यह कहते हुए उन्होंने मेरी तरफ हैंडशेक के लिए हाथ बढ़ाया।

"पाँय लागी मास्टर जी ,यह घर का ही लड़का है कूल ड्यूड नहीं। आपके प्रिय शिष्य रामकिशोर का बेटा राम प्रकाश है। दिल्ली से हबा-पानी बदलने गांब आया है" कहते हुए रामजस काका ने मुझे उनके पैर छूने का इशारा किया। मैं उनके पैरों पर झुकने लगा तो उन्होंने मुझे बीच में रोकते हुए मेरा हाथ पकड़ लिया और हंसते हुए कहा।

"हाथ मिलाओ यंग मैन"

आई एम बेरी मॉडर्न।

पर तुम ठहरे देहाती कहीं के"।

उनकी बात सुनकर हम तीनों खिलखिलाकर हंसने लगे।

दिलीप कुमार
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
☎ 9956919354

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

छित्तूपुर गेट (बीएचयू)

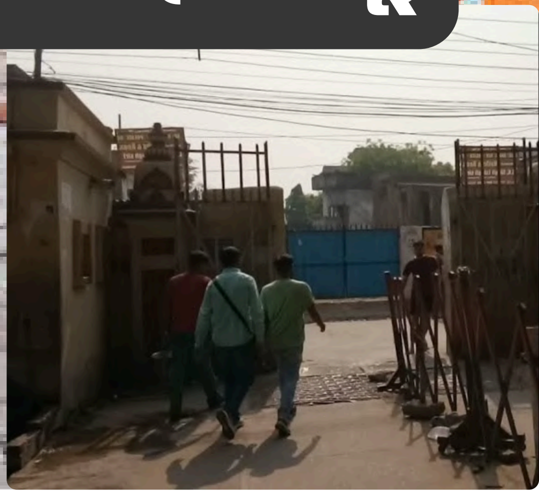

शाम के सात बजने वाले थे, बीएचयू के छित्तूपुर गेट के पास वाले एक ठेले पर भीड़ देखकर मुझे लगा कि कुछ मामला हुआ होगा। लेकिन, ठेले के नजदीक पहुंचने पर पता चला कि यहां पर भैया का आलू पराठा इतना फेमस है कि दोपहर दो बजे से ही भीड़ लगनी शुरू हो जाती है। इतना ही नहीं, इन्होंने तो बढ़ती भीड़ को देखते हुए अब सादे पराठे भी बनाना शुरू कर दिया है। छात्रों का तो समझ में आता है कि वो घर से बाहर पढ़ने के लिए आए हैं और कभी खाना नहीं बनाने का मन करता होगा तो इन भैया के पास आकर खा लेते होंगे।

लेकिन संवेदनात्मक बात यह है कि मैंने देखा कि वहां छात्रों से ज्यादा भीड़ बुजुर्गों की थी, जो शायद दिनभर मेहनत - मजदूरी करके वहां पेट की अग्नि शांत करने के लिए पहुंचे हुए थें। ये सब देखकर मेरा मन बड़ा कुंठित हुआ और हृदय द्रवित हो गया। मैं सोचने पर विवश हो गया कि आखिर ये आधुनिकता के पायदान पर चढ़ने वाला युग किस त्रासदी से गुजर रहा है ?

बचपन से परिवार को पालने वाले उस बुजुर्ग को इस उम्र में भी दो वक्त की रोटी के लिए मेहनत करना पड़ रहा है और उस आदमी को दो वक्त की रोटी के लिए बाहर भीतर करना पड़ रहा हैं। क्या उन औलादों के पास इतनी भी क्षमता नहीं है कि वो अपने बूढ़े बाप को दो वक्त की रोटी खिला सके ? फिर तो धिक्कार हैं ऐसे औलाद होने पर। कामयाबी चाहे कोई लाख प्राप्त कर ले, लेकिन अगर उसके सृजनहार ही सुखी नहीं हैं, तो फिर सब खाक है। आप चाहे लाख विषयों पर अपने माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी से मतभेद रखें।

किंतु मनभेद की स्थिति पैदा करके अपने माता पिता के परवरिश पर उंगली उठवाने की कभी चेष्टा न करें। अन्यथा ये भगवान के लिए भी असहनीय होगा, जिसका परिणाम आपको भी आपके वृद्धावस्था में अवश्य पूरे धूम धाम से झेलने को मिल सकता हैं। आप किसी भी उम्र के पड़ाव

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

पर हां, परिवार में तालमेल हमेशा बनाकर रखिए। मुझे ये शहर बहुत कुछ सिखाता है.. कमाना, लुटाना, छिपाना, और बचाना। ये दुनिया गोल है और यहां पैसों का मोल है। इन सबके बीच अपने परिवार के सदस्यों का ख्याल जरूर रखिए।

"लाख दुख में भी मुस्कुराता हुआ चेहरा हैसियत की निशानी है।"

शेष अगले अंक में...

ए. के. प्रसाद
छात्र, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
+91 725-8072-725

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

Pranti

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

कृपया www.prantiindia.com/subscription पर जाएं।

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia

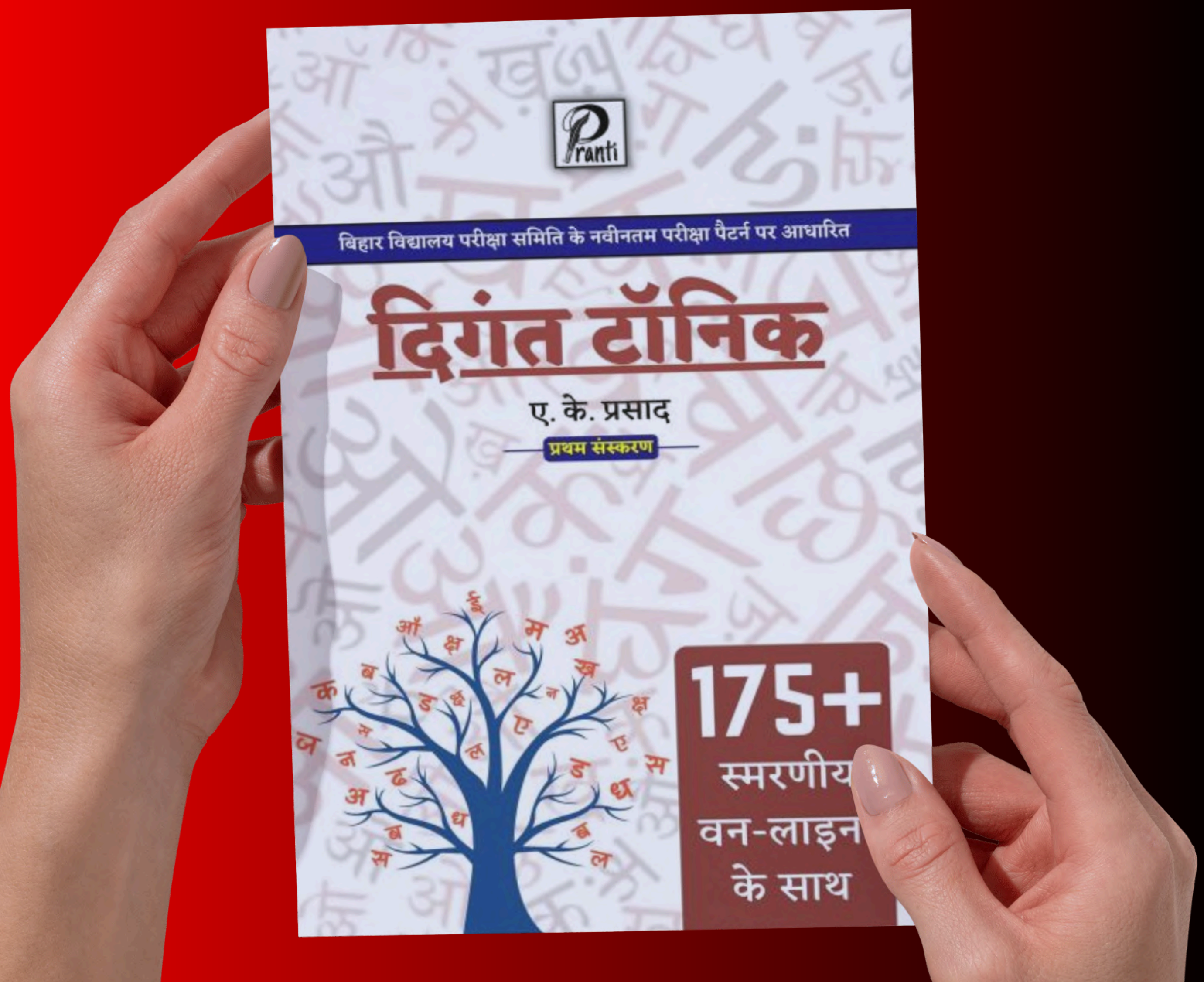

अपनी प्रति बुक करने के लिए व्हाट्सएप्प करें-

+91 94-535354-95

बिहार बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए प्रान्ति इंडिया के तत्वावधान में ए. के. प्रसाद द्वारा अपनी निपुणता की कुंजी को स्याही और अक्षरों के जरिए दिगंत टॉनिक पुस्तक में विभूषित करने का सफल प्रयास किया गया हैं। इस पुस्तक में गद्यखण्ड व पद्यखण्ड के पाठ्याधारित सारांश, महत्वपूर्ण तथ्य और स्मरणीय वन-लाइनर समेत आवश्यक पाठ्य सामग्री समाहित की गई है। इस अनुपम पुस्तक की सृजन की अवधि में पूर्ण लगन से कठिन परिश्रम की गयी हैं, ताकि परीक्षार्थी सही मार्गदर्शन में अपनी ऊर्जा को व्यय करके शानदार सफलता अर्जित कर सकें। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपको यह संकलन अवश्य पसंद आएगा, जो आपकी परीक्षा में सहायक होगा। हम आपकी सफलता और उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

-टीम: प्रान्ति इंडिया

@prantiindia | @prantiindia | @prantiindia